IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, July 2022
Impact Factor: 6.252

पतंजलि योगसूत्र : भारतीय परम्परा में शिक्षा

डॉ. कल्पना दीक्षित
लेक्चरर, श्री रावतपुरा सरकार आरी, झाँसी
(1322 न्यू प्रेम गंज एस.आई.सी. सिपरी बाजार के सामने, झाँसी (उ.प्र.)

शोध सारांशः

योग विषय पर आजकल बहुत से विचार प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इस विषय पर पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में आसानी से पाठ्य सामग्री भी उपलब्ध हो जाती है। आज यदि आवश्यकता है, तो वो इसके व्यवस्थित स्वरूप को जानने की है। इसके अतिरिक्त विभिन्न मतों में योग की परिभाषा के साथ योगसूत्र में योग की परिभाषा के महत्त्वपूर्ण बिन्दु पर विस्तार से विचार किया गया है। जिससे योगसूत्र में योग की परिभाषा को तुलनात्मक दृष्टि से समझा जा सकता है। इस प्रकार संक्षिप्त रूप में योगसूत्र की विषय वस्तु के साथ–साथ योग की परिभाषा को बहुत अच्छे ढंग से प्रस्तुत करना है। प्रस्तुत शोध पत्र के द्वारा योग के महत्त्व और भारतीय दर्शन में पातंजलि योग सूत्र के स्थान को भी ठीक–ठीक समझने का प्रयास किया जा रहा है।

मुख्य शब्दः पतंजलि, योगसूत्र, चित्त, भारतीय, परम्परा, दर्शन, महत्त्व, ऐतिहासिक, दार्शनिक, विचारधारा आदि।

संदर्भ स्रोत :

1. श्री वास्तव, डॉ॰ सुरेशचन्द्र,(2008) पातंजलयोग दर्शनम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
2. मिश्र, डॉ॰ जगदीशचन्द्र, (2008) भारतीय दर्शन, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
3. दासगुप्त, सुरेन्द्रनाथ (2008) भारतीय दर्शन का इतिहास भाग–1 अनु॰ कलानाथ शास्त्री व सुधीर कुमार, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
4. तीर्थ, स्वामी ओमानंद, (सम्वत्–2054), पातंजल योग प्रदीप, गीता प्रेस, गोरखपुर
5. योगदर्शन, लेखक– परमहंस निरंजनानंद, प्रकाशक – श्री पंचदशनाम परमहंस अलखबाड़ा, बिहार
6. कल्याण का योगांक, प्रकाशक – गीताप्रेस गोरखपुर
7. विवेकानंद साहित्य, भाग 3 व 4, प्रकाशक – अद्वैत आश्रम, कोलकत्ता
8. योग मीमांसा, त्रैमासिक शोध पत्रिका, प्रकाशक – कैवल्य धाम लोनावला, महाराष्ट्र
9- http://hinduebooks.blogspot.com
10- http://www.hindudharmaforums.com
11- http://sanskritdocuments.org
12- http://archive.org